

Padma Shri



SHRI K. K. RAMACHANDRA PULAVAR

Shri K. K. Ramachandra Pulavar is the Director of Krishnan Kutty Pulavar Memorial Tholpavakoothu & Puppet Centre which is promoting shadow puppetry all over the world. He is widely recognized across the globe for his contributions to the field of shadow puppetry and at the same time continuing the huge tradition of India. This has made India a home land or the origin of puppetry.

2. Born on 25th May, 1960 to Late Guru Krishnan Kutty Pulavar (Sangeet Natak Akademi awardee, 1980) and Smt. Gommathyammal, Shri Pulavar received his pre degree from University of Calicut in 1978. Later, he worked as a Teacher in Maharashtra appointed by Handicrafts, Ministry of Textiles, Government of India. He also worked as government servant in Postal Department of Kerala. After his father's demise, he resigned from that job and got fully engaged with his traditional art form Tholpavakoothu.

3. In 2004, Shri Pulavar started an organization whose motto was to uplift puppetry in Kerala. He is the 11th generation artist who is continuing the tradition of shadow puppetry in Kerala. He started learning the first chapters of the art form from his guru/father at the age of six. This art form is performed in the Bhagavathy temples at Kerala from January to May every year.

4. Shri Pulavar has initiated new themes and contemporary ideas to revive and popularize the art form in public spheres. He has innovatively created many new contemporary stories through tholpavakoothu like Mahathma Gandhi koothu, Jesus koothu, Ayyappacharitham, Mahabharatam, Mahabalikootu, Chandalabishuki, Election Awareness, Social awareness stories, Anti-Ragging campaigns, Food safety awareness and social consequences of deforestation, Swachh Bharat programs, COVID awareness campaigns, Modi koothu and COVID Lockdown stories. He had prepared a pedagogical approach to shadow puppetry which will make the art form to everyone hands. That initiative helped to learn puppetry to young aspiring minds. He has conducted several workshops and have 1000's of disciples all over the world. He has also designed workshops for physically and mentally challenged students.

5. Shri Pulavar is the recipient of numerous awards and honours. He has been honoured by Sangeet Natak Akademi Award in 2015. He has been performing as empanelled artist in ICCR regional cultural programs since 1980. He is Grade II Performer and Singer in All India Radio since 1986. He received Junior Research Fellowship in 1990 and Senior Research Fellowship in 2004 from the Ministry of Culture, Government of India. He received Dakshina Chithra Virudhu (South Indian Award), 2008; Kerala Folklore Akademi Award, 2011; Kerala Sangeet Natak Akademi Kalasri Puraskar, 2013 and Grant Kerala Tourism Crafts Award, 2015. He has performed shadow puppetry in around 42 countries and received awards and appreciations from Russia, Sweden, Greece, Germany, Thailand, Singapore, Muscat, Japan, Spain, Ireland and Hungary.



श्री के. के.रामचंद्र पुलवर

श्री के. के. रामचंद्र पुलवर, कृष्णन कुट्टी पुलावर मेमोरियल थोलपावाकुथु एंड पपेट सेंटर के निदेशक हैं। यह सेंटर दुनिया भर में छाया कठपुतली कला को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहा है। वह छाया कठपुतली के क्षेत्र में अपने योगदान और भारत की महान परंपरा को जारी रखने के लिए विश्वविख्यात हैं। इसके कारण, भारत कठपुतली कला का मूल देश या उद्गम बन गया है।

2. 25 मई, 1960 को स्वर्गीय गुरु कृष्णन कुट्टी पुलावर (वर्ष 1980 में संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कृत) और श्रीमती गोम्मतीयम्मल के घर में जन्मे श्री पुलवर ने छह साल की उम्र से ही अपने गुरु/पिता से इस कला के शुरुआती गुर सीखने शुरू कर दिए। वर्ष 1978 में उन्होंने कालीकट यूनिवर्सिटी से अपनी प्री डिग्री हासिल की। बाद में उन्होंने हस्तशिल्प, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नियुक्त किए जाने पर महाराष्ट्र में एक शिक्षक के रूप में काम किया। उन्होंने केरल के डाक विभाग में एक सरकारी कर्मचारी के तौर पर भी अपनी सेवाएं दीं। पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह अपनी पारंपरिक कला शैली थोलपावाकुथु से जुड़ गए।

3. श्री पुलवर ने वर्ष 2004 में एक संगठन शुरू किया जिसका उद्देश्य केरल में कठपुतली कला को लोकप्रिय बनाना था। वह केरल में छाया कठपुतली की परंपरा को जारी रखने वाले 11वीं पीढ़ी के कलाकार हैं। हर वर्ष जनवरी से मई तक केरल के भगवती मंदिरों में इस कला का प्रदर्शन किया जाता है।

4. श्री पुलवर ने इस कला को पुनर्जीवित करने और इसे जनता के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए नए कथानकों और सामयिक विचारों की शुरुआत की है। उन्होंने थोलपावाकुथु के जरिये कई नई समकालीन कहानियां गढ़ीं जिनमें महात्मा गांधी कुथु, जीसस कुथु, अय्यप्पाचरितम, महाभारतम, महाबलीकुटु, चंदलाबिशुकी, चुनाव जागरूकता, सामाजिक चेतना से संबंधित कहानियां, रैगिंग विरोधी अभियान, खाद्य सुरक्षा जागरूकता और वनों की कटाई के सामाजिक परिणाम, स्वच्छ भारत कार्यक्रम, कोविड जागरूकता अभियान, मोदी कुथु और कोविड लॉकडाउन कहानियां। उन्होंने छाया कठपुतली के लिए एक शैक्षिक पद्धति तैयार की, जिससे यह कला हर किसी तक पहुंच सकेगी। इस पहल ने इच्छुक युवाओं को कठपुतली की कला सीखने में मदद की। उन्होंने दुनिया भर में कई कार्यशालाएं आयोजित की हैं और पूरी दुनिया में उनके हजारों शिष्य हैं। उन्होंने शारीरिक और मानसिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए भी कार्यशालाओं का खाका तैयार किया है।

5. श्री पुलवर को अनगिनत पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें वर्ष 2015 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। वह वर्ष 1980 से आईसीसीआर के क्षेत्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में एक पैनलबद्ध कलाकार के रूप में प्रदर्शन करते रहे हैं। वर्ष 1986 से वह आकाशवाणी में ग्रेड II कलाकार और गायक हैं। उन्हें संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से वर्ष 1990 में जूनियर रिसर्च फेलोशिप और वर्ष 2004 में सीनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त हुई। उन्हें दक्षिण चित्रविरुधु (दक्षिण भारतीय पुरस्कार), 2008; केरल फोकलोर अकादमी पुरस्कार, 2011; केरल संगीत नाटक अकादमी कलाश्री पुरस्कार, 2013 और ग्रांट केरल टूरिज्म क्राफ्ट्स अवार्ड, 2015 प्रदान किया गया। उन्होंने लगभग 42 देशों में छाया कठपुतली का प्रदर्शन किया है और उन्हें रूस, स्वीडन, ग्रीस, जर्मनी, थाइलैंड, सिंगापुर, मस्कट, जापान, स्पेन, आयरलैंड और हंगरी से पुरस्कार और सराहना प्राप्त हुई है।